मधुबन ओम् शान्ति अंक 359 जून 2022

पत्र-पुष्प

"परखने की शक्ति द्वारा माया के भिन्न-भिन्न स्वरूपों को पहचान विजयी रत्न बनो"
दादी जी की शुभ प्रेरणायें 21-05-22

प्राणप्यारे अव्यक्तमूर्त मात-पिता बापदादा के अति लाडले, सदा अपनी साफ स्वच्छ बुद्धि द्वारा स्वयं को व सर्व को परखने वाले, मास्टर सर्वशक्तिवान की स्मृति से माया के भिन्न-भिन्न स्वरूपों को पहचान सदा विजयी, एकरस स्थिति में रहने वाली निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - बापदादा समय प्रमाण हम बच्चों को एकाग्रता के अभ्यास द्वारा सदा एकरस स्थिति में रहने का विशेष इशारा दे रहे हैं, इसलिए कितनी भी बड़े से बड़ी परिस्थिति सामना करे, उसमें क्या हुआ! कैसे हुआ!... इस सोच में अपना अमूल्य समय नहीं गंवाना है। किसी भी प्रकार के प्रश्नों में मन को उलझाना नहीं है। मास्टर सर्वशक्तिवान की स्मृति में रहने से कोई भी परिस्थिति चींटी समान अनुभव होगी।

बाबा कहते बच्चे, अब माया के अन्तिम वार को पहचान सदा विजयी बनकर रहो। इस परमार्थ मार्ग में विघ्न-विनाशक बनने के लिए माया को परखने व निर्णय करने की शक्ति को बढ़ाओ क्योंकि वर्तमान समय माया बहुत रॉयल ईश्वरीय रूप रच करके सामना कर रही है, इसको परखने के लिए एकाग्रता अर्थात् साइलेन्स की शक्ति चाहिए। तो हर एक को अब ऐसी डीप साइलेन्स की भट्ठी में बैठ एकाग्रता के अभ्यास द्वारा हलचल में भी अचल स्थिति बनानी है। बाबा ने तपस्या की मौज का अनुभव करने के लिए दो शब्दों की ही स्मृति दिलाई है - (1) डॉट (2) नॉट, जो बातें बीत गई उन्हें डॉट लगा दो और जो काम की नहीं हैं, उन्हें नॉट कर दो। यह डॉट और नॉट दो शब्द भी स्मृति में रहेंगे तो स्थिति सदा एकरस बन जायेगी। सहजयोगी जीवन का अनुभव होगा।

बाकी अभी भारत में गर्मी की फुल सीज़न होते भी चारों ओर विंग्स के भाई बहिनें खूब अथक बन सेवायें कर रहे हैं। सभी का लक्ष्य है हमें अब जन-जन को बाबा का सन्देश देकर सेवाओं के चैप्टर को सम्पन्न करना है। सेवायें करते सिर्फ यही ध्यान रहे कि स्थिति कभी नीचे ऊपर न हो, इसके लिए कर्म करते बीच-बीच में संकल्पों की ट्रैफिक को ब्रेक देने वा रूहानी ड्रिल करने का अभ्यास करते रहो। कर्मयोगी बन कर्म किया और देहभान से न्यारे बन गये। तो कोई भी कर्म, बंधन का रूप नहीं बनेगा। सेवा के लिए कर्म संबंध में आओ और फिर न्यारे बन जाओ।

इस समय मधुबन के सभी स्थानों पर योग भट्ठियों के कार्यक्रम में चारों ओर के भाई बहिनें बहुत उमंग-उत्साह से आ रहे हैं। मनमोहिनी वन में कुछ नये सम्बन्ध-सम्पर्क वाली आत्माओं के लिए योग शिविर तथा विंग्स के कार्यक्रम भी चल रहे हैं।

बाबा के घर में जो भी आते हैं वह खूब रिफ्रेश हो, भरपूर होकर जाते हैं। यह बाबा की तपस्या स्थली हर आत्मा को अपनी ओर आकर्षित करती रहती है। यहाँ आने वाले सभी भाई बहिनें बापदादा और निमित्त आत्माओं की डायरेक्ट पालना का बहुत सुन्दर अनुभव करते हैं।

अच्छा - सबको बहुत-बहुत याद...

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के.रतनमोहिनी

ये अव्यक्त इशारे

अन्तिम परीक्षाओं में पास होने के लिए परखने की शक्ति को बढ़ाओ

1) आगे चलकर अनेक प्रकार की परीक्षायें आयेंगी, उन परीक्षाओं में पास होने के लिए परखने की शक्ति चाहिए। अगर परख नहीं सकते हो कि यह किस प्रकार का विघ्न है! माया किस रूप में आ रही है और क्यों मेरे सामने यह विघ्न आया है, तो उन परीक्षाओं में फेल हो जायेंगे। अगर परख अच्छी होगी तो पास हो सकते हैं।

2) विघ्नों का सामना करने के लिये पहले चाहिए परखने की शक्ति फिर चाहिए निर्णय करने की शक्ति। जब निर्णय करेंगे यह माया है वा अयथार्थ है। फायदा है वा नुकसान? अल्पकाल की प्राप्ति है वा सदाकाल की प्राप्ति है! परखने के साथ जो समय पर ठीक निर्णय करते हैं उनमें सहनशक्ति स्वत: आ जाती है। जिनकी निर्णय शक्ति तेज होती है वह कभी हार नहीं खा सकते।

3) जब कोई भी परिस्थिति सामना करती है, उस समय क्यों हुआ, क्या हुआ... इस सोच में समय नहीं गंवाओ, प्रश्नों में मन को उलझाओ मत। सदा यही सोचो कि जो हुआ उसमें कल्याण भरा हुआ है, सेवा समाई हुई है। भल रूप सरकमस्टांस का है लेकिन समाई सर्विस है। ऐसा सोचने से और इस रूप से देखने से सदा अचल रहेंगे। मास्टर सर्वशक्तिवान की स्मृति से परिस्थितियां चींटी समान अनुभव होंगी।

4) अब समय ऐसा आ रहा है जो परखने की शक्ति अति आवश्यकता है! जितनी परखने की शक्ति तीव्र होती जायेगी, उतना हर कार्य में सफलता भी मिलती रहेगी। पूरी परख ना होने कारण जो उसको चाहिए, जिस रूप से उनकी तकदीर जग सकती है वह प्राप्ति उनको नहीं होती है इसलिए सर्विस में सफलता कम मिलती है।

5) समय प्रमाण ज्ञान-योग के साथ-साथ अब परखने की ज्योतिष विद्या भी जाननी है। कोई भी व्यक्ति सामने आए तो आप एक सेकेण्ड में उनके तीनों कालों को परख लो। एक तो पास्ट में उनकी लाइफ क्या थी और वर्तमान समय उनकी वृत्ति, दृष्टि और भविष्य में कहाँ तक यह अपनी प्रालब्ध बना सकते हैं, यह जानने व परखने की शक्ति अभी और बढ़नी चाहिए।

6) परखने की शक्ति को बढ़ाने के लिए बुद्धि की लाइन बहुत स्वच्छ चाहिए। स्वच्छ बुद्धि तब बनेगी जब कोई भी संकल्प मर्यादा के विपरीत नहीं होगा। अमृतवेले से रात के सोने तक हर कदम मर्यादा अनुकूल, स्मृति वृत्ति और दृष्टि भी सदा ही मर्यादा प्रमाण हो तब आपकी स्वच्छ बुद्धि स्वयं को व सर्व को सहज ही परख सकेगी। परखने के साथ अगर निर्णय करने वा निवारण करने की शक्ति ठीक होगी तो हर बात का सामना कर सकेंगे।

7) परखने की शक्ति को बढ़ाने के लिए दिल की सफाई चाहिए। साथ-साथ संकल्प की जो शक्ति है उनको ब्रेक लगाने और मोड़ने की पॉवर चाहिए। जिनके पास यह दोनों ही शक्तियां हैं, उनके बुद्धि की शक्ति व्यर्थ नहीं जायेगी। इनर्जी वेस्ट ना होकर जमा होती जायेगी, जितनी जमा होगी उतना ही परखने की, निर्णय करने की शक्ति बढ़ेगी।

8) जब दुनिया में किसी भी कार्य अर्थ जाते हो और आसुरी सम्प्रदाय के साथ सम्बन्ध रखना पड़ता है, तो परखने की प्रैक्टिस होने से बहुत बातों में विजयी बन सकते हो। इस परखने की प्रैक्टिस को छोटी बात नहीं समझना, इस पर ही नम्बर ले सकते हो। कोई भी परिस्थिति को, कोई भी संकल्प वाली आत्माओं को, उनके वर्तमान और भविष्य दोनों कालों को परखने से विजयी बन जायेंगे।

9) मास्टर त्रिकालदर्शी, ज्ञान-स्वरूप बन अपनी जन्मपत्री स्वयं ही चेक करो और अपने भविष्य को देखो। इससे आप अपनी राशि व दशा को व लकीरों को बदल सकते हो। परखने के बाद, चेक करने के बाद, फिर चेंज करने का साधन अपनाना। नॉलेज के साधनों द्वारा ही सम्पूर्ण सिद्धि को प्राप्त कर सकेंगे।

10) परखने की शक्ति अगर कम है तो उनके पास हर बात में क्यों, क्या, कैसे.. क्वेश्चन मार्क बहुत होंगे। ड्रामा का फुल स्टॉप देना उनके लिए बड़ा मुश्किल होगा वे स्वयं ही क्यों, क्या कैसे की उलझन में होंगे। दूसरी बात - वह कभी भी किसी को समीप आत्मा नहीं बना सकेंगे। सम्बन्ध में लायेंगे लेकिन समीप सम्बन्ध में नहीं ला सकेंगे।

11) आगे चलकर ईश्वरीय रूप से माया ऐसा सामने आयेगी जो उनको परखने की बहुत आवश्यकता पड़ेगी इसलिए परखने की शक्ति सदैव अविनाशी रखना। अगर परखने की शक्ति कम होगी तो ईश्वरीय मार्ग से भटक जायेंगे। ब्राह्मण कुल की जो मर्यादायें हैं उन मार्यादाओं का स्वरूप नहीं बन सकेंगे।

12) अगर कोई शान्ति का प्यासा है, उसको शान्ति मिल जाये तो क्या होगा? प्राप्ति से अविनाशी पुरुषार्थी बन जायेंगे। तो हर एक के मन के भाव को परखने से, समझने से थोड़े समय में सर्विस की सफलता बहुत दिखाई देगी। अभी पुरुषार्थी स्वरूप हो फिर सफलता स्वरूप हो जायेंगे।

13) समय प्रमाण अपनी बुद्धि रूपी नेत्र को क्लीयर और केयरफुल रखना और इनएडवान्स नॉलेजफुल होकर परखने का वरदान लेकर जाना, जिससे कभी भी माया से हार नहीं खायेंगे। जिसकी माया से हार नहीं होती, उनके ऊपर सुनने वाले और देखने वाले बलिहार जाते हैं।

14) चलते-चलते कई बच्चे माया के वश मनमत को भी श्रीमत समझने लग पड़ते हैं इसलिए परखने की शक्ति सदैव काम में लगाओ। परखने में भी अन्तर होने से अपने आपको नुकसान कर देते हो इसलिए कहाँ भी अगर स्वयं नहीं परख सकते हो तो जो श्रेष्ठ आत्मायें निमित्त हैं उन्हों से सहयोग लो। वेरीफाय कराओ कि यह श्रीमत है वा मनमत है फिर प्रैक्टिकल में लाओ।

15) अपनी वृत्ति को भी परखने के लिए यह चेक करो कि वृत्ति का वायुमण्डल पर असर क्या है? वायुमण्डल अगर और दिखाई देता है तो समझना चाहिए अपनी वृत्ति में कमज़ोरी है। उस कमजोरी को मिटाना चाहिए। वृत्ति परिवर्तन होती है व्रत लेने से।

16) जैसे सोने को परखने के लिये कसौटी पर रखा जाता है, इससे मालूम हो जाता है कि सच्चा है वा झूठा है। ऐसे ही स्वयं को परखने व निर्णय शक्ति को बढ़ाने के लिये आपके सामने साकार बाप का हर कर्तव्य और हर चरित्र कसौटी है, जो भी कर्म करते हो, जो भी संकल्प करते हो, अगर इस कसौटी पर देख लो कि यह यथार्थ है वा अयथार्थ है, व्यर्थ है वा समर्थ है, तो इस कसौटी पर देखने के बाद जो भी कर्म करेंगे वह सहज और श्रेष्ठ होगा।

17) सेल्फ रियलाइजेशन का अर्थ है - अपने आपको परखना व जानना। पहले बाप को परखेंगे तब जानेंगे या पहचान सकेंगे और जब पहचानेंगे तब बाप के समीप व समान बन सकेंगे। परखने की शक्ति है नम्बरवन। ज्ञान का आधार है पहले स्वयं को पहचानना फिर बाप को पहचानना अर्थात् परखना कि यह बाप का कर्तव्य चल रहा है, इसे ही नॉलेजफुल की स्टेज कहते हैं।

18) महावीर अर्थात् सदा मायाजीत। महावीर कभी माया से घबराते नहीं, चैलेंज करते हैं। किसी भी रूप में माया आवे, लेकिन परखने की शक्ति से माया को परखते हुए विजयी होंगे। माया को दूर से आते हुए परख लेंगे, जितनी परखने की शक्ति तेज होती जायेगी तो दूर से ही माया को परखकर भगा सकेंगे।

19) जिसमें सहनशीलता का गुण है, साक्षी बन ड्रामा की ढाल को पकड़ कर रखता है उसमें परखने वा निर्णय करने की शक्ति सहज आ जाती है। जितनी आपमें सहनशक्ति होगी उतना सर्वशक्तिमान की सर्वशक्तियां स्वत: प्राप्त होती रहेंगी। सहनशक्ति वाले जो भी शब्द बोलेंगे वह साधारण नहीं होगा और कर्म भी जो करेंगे वह भी उसके प्रमाण ही करेंगे।

20) बुद्धि की एकाग्रता से परखने की शक्ति आती है, इसके लिए व्यर्थ वा अशुद्ध संकल्पों की हलचल से परे एक में सर्व रस लेने वाली एकरस स्थिति चाहिए। अगर अनेक रसों में बुद्धि और स्थिति डगमग होती है तो परखने की शक्ति कम हो जाती है और न परखने के कारण माया अपना ग्राहक बना देती है। यह माया है, यह भी पहचान नहीं सकते। यह रांग है, यह भी जान नहीं सकते।

21) परमार्थ मार्ग में विघ्न-विनाशक बनने का साधन है - माया को परखना और परखने के बाद निर्णय करना क्योंकि परमार्थी बच्चों के सामने माया भी रॉयल ईश्वरीय रूप रच करके आती है, जिसको परखने के लिए एकाग्रता अर्थात् साइलेन्स की शक्ति को बढ़ाओ। साइलेन्स की शक्ति हाहाकार से जयजयकार करा सकती है। साइलेन्स की शक्ति सदा आपके गले में सफलता की मालायें पहनायेंगी।

22) सेल्फ रियलाइजेशन का अर्थ है - अपने आप को परखना व जानना। जब अपने को पहचानेंगे तब बाप के समीप व समान बन सकेंगे। परखने को ही कॉमन शब्दों में पहचान कहते हैं। बाप के कर्तव्य को पहचानना और यह ड्रामा जिस रीति से, जैसा चल रहा है, उसी के साथ-साथ मन की स्थिति चलती रहे, जरा भी हिले नहीं, ऐसे ड्रामा की पटरी पर सेकण्ड बाई सेकण्ड चलते रहना, यही है मन की एकाग्रता।

23) सदा सर्वशक्तिवान बाप के संग रहो तो कभी मुरझायेंगे नहीं। कनेक्शन ठीक हो तो आटोमेटिकली सर्वशक्तियों की करेन्ट आयेगी। जब सर्व शक्तियां मिलती रहेंगी तो सदा हर्षित रहेंगे। गम खत्म हो जायेगा। संगम का समय है खुशियों का, अगर ऐसे समय पर कोई गम करे तो बुरा लगेगा ना! इसलिए

परखने की शक्ति धारण कर गम वा दु:ख की दुनिया से किनारा कर लो।

24) मैं बाप समान सर्व शक्तियों का अधिकारी मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, इस स्मृति को बार-बार रिवाइज़ और रियलाइज़ करो, फिर सदा मास्टर सर्वशक्तिवान अनुभव करेंगे और पुरुषार्थ में कभी थकेंगे नहीं। सच्चे दिल से रियलाइज़ कर, कारण को परखकर फिर उसे निवारण का रूप देते हुए आगे बढ़ते चलो।

25) जो सामने आये, उनके नयनों से उन्हें परख सकते हो। उस समय उनके नयन, उनकी वृत्ति एक ही तरफ एकाग्र होगी, उनके बोल भी वही निकलेंगे, उनकी स्थिति नशे वाली होगी। दृष्टि में सृष्टि कहा जाता है, तो आप उनकी दृष्टि से पूरी सृष्टि को जान सकते हो, इसके लिए सिर्फ अपनी बुद्धि को बहुत स्वच्छ और एकाग्र रखो। कभी भी किसी के बहकावे में नहीं आना।

26) वर्तमान समय अगर परखने की शक्ति कम होगी तो धोखे में आ जायेंगे क्योंकि ऐसी कई आत्मायें आपके सामने आयेंगी जो अन्दर एक और बाहर से दूसरी होंगी। परीक्षा लेने के लिए आयेंगी इसलिये ध्यान रखना है कि यह किसलिये आया है? उनकी वृत्ति क्या है? इसके लिए अपने लाइट की परसेन्टेज को बढ़ाओ। अपने को ला-मेकर समझकर हर कदम ला-फुल बनकर श्रीमत प्रमाण उठाओ, उसमें मन-मत मिक्स नहीं करो।

27) आप एक-एक मास्टर रचयिता हो। मास्टर रचयिता अपनी रचना से भी अपनी पावर को परख सकते हैं। जैसा बीज होता है वैसा ही फल निकलता है। अगर बीज पावरफुल नहीं होता है तो कहाँ-कहाँ फूल निकलेंगे, फल निकलेंगे लेकिन स्वीकार करने योग्य नहीं होंगे। अगर बीज पावरफुल नहीं है तो रचना भी जो पैदा होती है वह स्वीकार करने योग्य नहीं होती।

28) समय प्रति समय कई प्रकार के लोग, कई प्रकार की परीक्षायें आती रहती हैं, आगे चलकर और भी आयेंगी। ऐसे समय पर परखने की शक्ति चाहिए। हर प्रकार की परीक्षा में लोगों को परखना और शक्तियों की रखवाली करना, यह पाण्डवों का विशेष काम है। इसके लिए पाण्डवों को पहले अपनी रखवाली करनी है फिर चारों ओर की रखवाली करनी है।

29) हरेक रत्न एक दो से श्रेष्ठ है लेकिन फिर भी परखने की प्रैक्टिस जरूर चाहिए। इस पर ही नम्बर ले सकते हो। कोई भी परिस्थिति को, कोई भी संकल्प वाली आत्माओं को, वर्तमान और भविष्य दोनों कालों को भी परखने की शक्ति को तीव्र बनाने के लिए आत्मिक स्थिति के साथ आपकी बुद्धि में ज्यादा व्यर्थ संकल्प न चलें। बुद्धि सदा एक की याद में, एक के ही कार्य में और एक रस स्थिति में हो। अपने व्यर्थ संकल्पों की मिक्सिंग न हो, तब ही जो जैसा है वैसा परख सकेंगे।

30) आपका जो वायदा है कि हम एक हैं, 'एक के हैं, एक के होकर रहेंगे' एक की ही मत पर चलेंगे, यह सदैव पक्का रखना। जितना आप अव्यक्त स्थिति में स्थित रहेंगे उतना माया के बहुरूपों को सहज परख कर अपने को सेफ कर सकेंगे। अव्यक्त स्थिति में रहने से हर कर्म में अलौकिकता का अनुभव होगा। हर कर्मेन्द्रिय से अतीन्द्रिय सुख की महसूसता होगी। चेहरे पर रूहानियत और अलौकिकता दिखाई देगी।

(त्रिमूर्ति दादियों के अमृत वचन)

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* *मधुबन*

"दृढ़ता को साथी बनाकर स्वयं को परिवर्तन करो तब सम्पन्नता और सम्पूर्णता आयेगी"

(गुल्जार दादी जी 21-07-2007)

बाबा ने बड़े प्यार से हम बच्चों को संगठित रूप में इस भटठी में बुलाया है क्योंकि बाबा हमेशा कहते हैं संगठन की शक्ति बहुत बड़ी है। तो संगठित रूप में हम इस भट्ठी के लक्ष्य को लक्षणों में लायेंगे तो बापदादा हमारे को खुशी-खुशी से अपने बाँहों की माला डालेंगे। हमको सीन याद आती है कि जब भी बाबा हम बच्चों को वतन में इमर्ज करते हैं तो बाबा की बाहें इतनी बड़ी हो जाती हैं जो हम संगठित रूप में बाबा की बाहों में समा जाते हैं।

तो इस भट्ठी का लक्ष्य है – सम्पूर्णता की रूहानी यात्रा। भट्ठी का यह लक्ष्य ही हमको याद दिलाता है कि हमें क्या करना है? सम्पूर्णता की यात्रा में तो सम्पूर्ण और सम्पन्न बनना ही होगा। हर

साल हम भट्ठियां करते हैं और उसमें कई वायदे हम बाबा से करके जाते हैं। बाबा कहता है कि फाइल में कागज एड होते रहते हैं लेकिन फाइनल नहीं करते हैं। तो इस भट्ठी में क्यों नहीं हम यह दृढ़ संकल्प करें, कुछ भी हमको सहन तो करना ही पड़ेगा लेकिन संगठन से हम अलग हो नहीं सकते हैं और संगठन में कुछ न कुछ पेपर तो आने ही हैं। लेकिन बाबा कहते हैं पेपर का आना और हमको पास विथ ऑनर होना।

बाबा ने प्यार का सर्टिफिकेट तो हम सबको दे ही दिया है कि मेरे बच्चे प्यार में तो सब पास हैं। लेकिन इस प्यार का रिटर्न बाबा कहते भले और कुछ भी नहीं दो लेकिन स्व को टर्न कर लो, यही इस बाप के प्यार का रिटर्न है। तो प्यार हम सबका है और निमित्त भी हम सभी हैं, बाबा से वायदे भी बहुत बारी कर ही चुके हैं सिर्फ निभाने में हम सबके सामने कोई न कोई पेपर आता है। और आना भी है, बाबा ने यह भी कह दिया है कि ऐसे नहीं समझना कि लास्ट तक पेपर नहीं आने हैं, लास्ट में तो और ही कड़े पेपर आने हैं। तो पेपर से घबराने वाले जो होते हैं वो पढ़ाई ठीक नहीं पढ़ते हैं।

बाबा ने लास्ट सन्देश में कहा था कि बच्चे वायदा बहुत अच्छा करते हैं, संकल्प करते हैं, अमृतवेले उठ करके बाबा से इतनी मीठी-मीठी बातें करते हैं और प्रॉमिस करते हैं बाबा हम आपको सबूत दिखाने वाले सपूत बच्चे हैं, ऐसे वायदे करते हैं। लेकिन होता क्या है कि जब कोई समस्या आती है तो दृढ़ संकल्प में थोड़ी कमी कर देते हैं, संकल्प होता है लेकिन उसमें दृढ़ता 100 परसेन्ट नहीं होती है। क्यों, क्या, कैसे... यह प्रश्न उठने से दृढ़ता में कमी हो जाती है। और दृढ़ता में कमी होने के कारण हम समस्याओं का सामना नहीं कर सकते हैं। वह समस्या लक्षण से हमको थोड़ा दूर कर देती है। तो इस भट्ठी का प्रोग्राम जबकि इतने उमंग उत्साह से बापदादा और दादी ने रखा है तो क्यों नहीं दृढ़ता के संकल्प को अपना साथी बनायें - कुछ भी हो जाये, सहन करना पड़ेगा, परिवर्तन होना पड़ेगा लेकिन हमको बनना है। दूसरे बनें, नहीं बनें लेकिन हम हरेक अगर यह लक्ष्य रखें मुझे बदलना है, मुझे बदलके शुभ भावना और शुभ कामना देनी है जिससे दूसरे भी बदलने का संकल्प करें, तब कहेंगे इस भट्ठी की नवीनता। तो अपने में दृढ़ता की ज्यादा अटेन्शन रख करके हमको यह करना ही है, इस बार ऐसा पक्का व्रत रखो तो आपकी वृत्ति, वृत्ति से वायुमण्डल और वायुमण्डल से ऑटोमेटिकली सभी को दूसरों को भी मदद मिलेगी और हमको भी मदद मिलेगी। तो आप सबका अगर यह संकल्प हो तो हम बाबा के आगे यह खुशखबरी रखेंगे क्योंकि हम लोग ही निमित्त हैं परिवर्तन करने और कराने के।

तो हम अपनी कमजोरी को जान करके उसको दृढ़ संकल्प से परिवर्तन करें, तो क्या नहीं हो सकता है! जब शब्द ही है सम्पूर्णता की भट्ठी तो क्यों नहीं हम सम्पूर्णता के 99 परसेन्ट तो नजदीक आयें। तो इस भट्ठी का लक्ष्य हम सबको यह रखना चाहिए।

हमें बाबा ने काम दिया है, स्व-परिवर्तन से विश्व परिवर्तन करने का। स्वयं को भी संस्कार-स्वभाव की कमजोरी से मुक्त करो क्योंकि आप जब मुक्त होंगे तब तो मुक्ति का गेट खुलेगा तभी सब मुक्ति में जा सकेंगे। तो हमारे आधार पर यह मुक्ति का गेट खोलना है। ब्रह्मा बाबा भी गेट खोलने के इंतजार में हैं, एडवांस पार्टी वाले भी इंतजार कर रहे हैं कि कब समाप्ति का समय आयेगा और हम सब साथ में मुक्तिधाम में चलेंगे। तो बाबा ने अब हमें काम दिया है कि मुक्त बनो क्योंकि मुक्ति से जीवनमुक्ति प्राप्त होगी। जीवन में मुक्त बनना माना जीवनमुक्त बनना और जीवनमुक्ति तो हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।

तो पहले हमारे दिल में जरा भी और कोई रावण की सामग्री नहीं हो क्योंकि अगर कुछ भी पुरानी नेचर है माना रावण की सामग्री अभी भी है। अंश मात्र, स्वप्न मात्र भी यह रावण की सामग्री का संग्रह होगा तो बाबा हमारे दिल पर कैसे बैठेगा? तो जब पहले हम अनुभव करेंगे मुक्ति जीवनमुक्ति का तब दूसरों को भी दिला सकेंगे। अभी तो बाबा हमको पल-पल देख रहा है क्योंकि बाबा का हम बच्चों से विशेष बहुत प्यार है। हमको भगवान ने गुरू भाई बनाया है, भगवान के हम गुरू भाई हैं तो कितना यह रूहानियत का नशा है! हम भगवान की स्टेज (संदली) पर बैठके मुरली सुनाते हैं इसलिए बाबा कहते हैं गुरू की गद्दी के अधिकारी बने हो तो गुरू भाई हो। और बाबा को प्यार इसीलिए है क्योंकि निमित्त हमको ही बनाया है। तो हम निमित्त हैं हमको बाबा पहले देखता है। मेरी टीचर कैसे हैं, मेरे गुरू भाई कैसे हैं? तो बाबा बहुत बारी चक्कर लगाके जाता है। वो तो सूक्ष्म में फरिश्ते रूप में छिपके आता है, छिपके चला जाता है। लेकिन बाबा देखता रहता है। कैसे बैठी है, कैसे सुनती है, कैसे क्या धारणा करती है? एक एक दिन में चलन और चेहरे में कितना फ़र्क पड़ा है? यह भी बाबा नोट करता रहता है। तो जिससे प्यार होता है उसे देखे बिना रहा नहीं जाता है। तो बाबा का हम सबसे बहुत दिल का प्यार है इसलिए बार-बार बाबा हमें चेक करता रहता है। तो बाबा की आशाओं को हमें पूर्ण करना है क्योंकि हम ही फर्स्ट नम्बर निमित्त आशाओं के दीपक हैं। निमित्त भाव से निर्मानता आती ही है। ओम् शान्ति।

"हर एक में सीखने की भावना सदा बनी रहे, इसमें अपना भी मित्र बनो और दूसरों को भी अपना मित्र मानो" (दादी जानकी जी 04-03-2006)

हम बच्चे कहते कमाल है बाबा की, तो बाबा कहता है कमाल है बच्चों की। बाबा हमको साथ देके, साथी बनाके स्थापना का कार्य करा रहा है जिससे हम बहुत ऊंच महान आत्मा बन जाते हैं, जिसने हर कर्म में सदा अपने को भगवान के साथी समझा है, वो महावीर है।

कर्मयोगी माना हर कर्म बाबा ने जो सिखाया है, वही करो। सतयुग में न कोई ऐसे कर्म सिखाने वाला है, न सीखने की जरुरत है। अभी बाबा हमको इतना चेन्ज कर रहा है, हमारी बुद्धि में क्या हो और कर्म में क्या हो, इससे वाणी भी बदल जाती है। गुण देखने से किसका अवगुण चला जाता है। अवगुण देखा तो मेरा भी गुण चला गया। यह ऐसा सूक्ष्म हिसाब-किताब है। तो अपना भी मित्र बनो और औरों को भी अपना मित्र मानो कि यह मेरा मित्र है। अगर हमारे से किसी को ईश्वरीय फैमिली ही महसूस नहीं हुई, तो बाबा की याद क्या रही? कोई अच्छा बनने से पहले ही समझे कि मैं अच्छा हूँ, तो वो कभी अच्छा नहीं बनेगा। तो अच्छा बनने के लिए अन्दर में पहले सबसे सीखने की भावना हो। कोई कहे मैं यह जानता हूँ, मुझे पता है, मुझे अनुभव है... तो वो किसको प्यारा नहीं लगता, कोई उसके नजदीक नहीं आयेगा। अगर कोई कहे कि मैं भी सीख रहा हूँ... तो ऐसी वाणी उसको बहुत ऊंचा बना देती है, इसलिए सीखने की भावना कभी न छूटे, यह मेरी प्रार्थना है। जो कुछ बीता है उससे बहुत कुछ सीखा है, सीखने की भावना से हमारा फ्यूचर बनेगा। सीखने की भावना नहीं होगी तो हमारा प्रेजेन्ट अच्छा नहीं होगा, फ्यूचर भी कुछ नहीं बनेगा। हमारी सीखने की भावना अनेक आत्माओं को परमात्मा की तरफ खींच सकती है।

दूसरा क्लास

पुरुषार्थ में आस्तिक बनो, हिम्मतवान बनो तो बाबा के लिए बंधायमान है (जानकी दादी जी)

मम्मा की विशेषता यही रही कि बाबा जो सुनाते थे वो सुनते अन्दर समाती रही। सुना, समाया और स्वरूप में लाया। मम्मा ने यह तीनों ही काम एक टाइम किये। कोई सुनता, समाता और स्वरूप में ले आता है तो लगता है यह कल्प पहले वाली, विजयी रत्नों में आने वाली आत्मा है।

माला का मणका जिसको बनना है, उनको शान्त रहना अच्छा लगता है। शान्त रहके अपने आपको देखना सहज हो जाता है, शान्त नहीं रहते हैं, औरों को देखते हैं तो अपने को देखना मुश्किल हो जाता है। फिर कोई बात ऐसी आती है तो मुश्किल लगती है इसलिए बाबा कहते हैं स्नेही रहो, स्नेह से सहयोगी रहो। एक दो की बात को प्यार से स्वीकार करो। एक दो की बात को सुनना और स्वीकार करना, यह भी सयाने का काम है। एक दो को सत्कार दो क्योंकि सम्पन्न बनना है, और सम्पन्न तब बनेंगे जब पुरानी बातों की समाप्ति करेंगे। समाप्ति वही कर सकेगा जो बीती को बीती करना जानता है।

होली माना बीती सो बीती। अगर किसी की कोई भी बीती बात मेरे मन में, दिल में है तो बाबा मेरे मन में, दिल में नहीं हो सकता है। दिल में बाबा के अलावा और कोई बात नहीं है तो सब बात सहज है। कोई बात को समाप्त करना माना सफलता पाना। इस कलियुग में कोई भी आत्मा ऐसे नहीं कह सकती कि

मैं निर्विकारी हूँ। वह जब देवी-देवताओं के मन्दिरों में जायेंगे तो हाथ जोड़के अपने को नीच पापी कहेंगे और उन्हें सम्पूर्ण निर्विकारी कहेंगे। वैसे भले शिवोहम्, ब्रह्मोहम् बोले...परन्तु देवताओं की मूर्ति के आगे ऐसे नहीं बोलते हैं। तो बाबा ने कहा है यह रिद्धि-सिद्धि भी तुम शक्तियों से उन भक्तों को मिली है, तब तो शक्ति लेने के लिए देवियों के पास जाते हैं। तो प्वाईन्ट्स पीछे याद करो परन्तु पहले यह चेक करो कि मेरे को बाबा ने कितनी शक्ति दी है? या बाप से कितनी शक्ति ली है?

जो एक बारी सेवा में ना करता है, उसको बाबा नास्तिक कहता है! तो सबसे अच्छी विधि है, पुरुषार्थ में आस्तिक बनना। दिल से हाँ कहने से बाबा मदद के लिए बंधायमान हो जाता है। आस्तिक वही होता है जो हिम्मतवान होता है। तो आपस में गुणों का भी गहरा कनेक्शन है। तो शान्ति से बैठ करके सारे गुणों को देखते अपने अन्दर में लाते जाओ। पुरुषार्थ में सच्चा बनना है तो इसमें अपने से ठगी नहीं करना। जो कुछ भी अलाए मिक्स है वो अभी निकाल देना है, तब सच्चे बाप के साथ सच्चे रह सकेंगे। तो समझकर सौदा कर लो, इसमें मूँझने वा कुछ पूछने की जरुरत नहीं है। अपने आप बाबा समझा रहा है, लायक बना रहा है। जो काम उसको कराना है, वो भी करा रहा है। जो करेगा उसकी प्रालब्ध बनेगी।

तन मन धन का भी आपस में कनेक्शन है। भगवान हमारी रूप रेखायें सब बदल देता है। तो हम कुछ नहीं करते हैं, पर ना कभी नहीं करते हैं। तो डायरेक्टर के डायरेक्शन पर चलने वाला अच्छा एक्टर बन सकता है। अपने से ठगी नहीं करना है क्योंकि बाबा सब देख रहा है और बाबा बहुत होशियार है, कभी आगे होता है, कभी पीछे होता है। सिर्फ कहता है मेरे पीछे-पीछे आते जाओ। कभी कहता तुम आगे चलो मैं तुम्हारे पीछे आता हूँ। फिर कहता है मैं ओबिडियन्ट हूँ ना। कमाल है ना।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृतवचन (मधुर महावाक्य)

तपस्वी बनना है तो सच्चे त्यागी, वैरागी, पूरे बेगर बनो

(1990)

1) तपस्या करनी है तो पहले त्यागमूर्त बनो। जो एक बार त्याग हुआ उसमें फिर आंख न डूबे। सम्बन्ध में भी खींच न हो। जब त्याग मूर्त बनते हैं तो ध्यान जाता है गुणमूर्त भी बनें। एक भी अवगुण न हो। एक होता है अवगुण, दूसरा खामी, तीसरा है कर्म। आसुरी अवगुण कई हैं। बैर रखना, बदला लेने की भावना, ईर्ष्या, गुस्सा करना यह बड़े अवगुण हैं।

2) कईयों में कोई बड़े अवगुण नहीं है लेकिन खामी है - स्व-चिंतन के बजाए परचिन्तन करना, अपने आपसे नाउम्मींद हो जाना, किसी से दोस्ती किसी से वैर रखना यह सब मेरी खामियां हैं। खामियां देही-अभिमानी बनने नहीं देती हैं। क्या करूं, यह मेरा स्वभाव है, मुझे खुशी नहीं होती है, यह खामी है। अगर सुस्ती है, अलबेलापन है, तो यह भी खामी है। जब चाहें खायें, सोयें, उठें - यह खामी हैं। यदि ऐसी खामियां रह जायेंगी तो तपस्या कैसे होगी!

3) बाबा कहते हैं खामियों को निकालना है तो अन्तर्मुखी बनो। पहले अन्तर्मुखता का गुण धारण करो तो अवगुण खत्म हो जायेंगे। कोई भी खामी अन्दर रह न जाए। इधर की बात उधर करना, उधर की इधर करना, छोटी बात को लम्बी करना, लम्बी बात है उसे स्पष्ट न करना, यह सब खामियां हैं। पूरी महसूसता न होना भी खामी है। खामी अर्थात् खराबी। दाल में कुछ काला है। तो अन्दर चेक करके अपने आपको साफ स्वच्छ बनाना है। खामियां मर्यादा को पालन करने नहीं देती।

4) ज्ञान मार्ग में आने से पता चलता है कि हमारे में कितनी खामियां हैं। ज्ञान का अभिमान, सेवा का अभिमान आने से

खामियां दिखाई नहीं पड़ती हैं। देही-अभिमानी स्थिति से, बाबा की याद से सूक्ष्म चेक करने से पता चलता है कि मेरे में क्या-क्या खामी है। किसी-किसी में अवगुण वा खामी नहीं होती लेकिन थोड़ी कमी हो सकती है। घबराहट होना - यह भी कमी है। बाबा ने पहले क्यों नहीं बताया कि तुम्हें तपस्या करना है। हम तो गृहस्थी हैं, काम धन्धे वाले हैं, ऐसे संकल्प उठाना यह भी खामी (कमी) है। अब बाबा का आर्डर मिला है तपस्या करनी है, अब नहीं करेंगे तो कब करेंगे। कल्प-कल्प की बाजी है। ऐसा न हो कि धर्मराज के सामने पश्चाताप करना पड़े। कयामत के पहले बाबा से शान्ति, सुख, पवित्रता का वर्सा लेकर हमें शान्ति फैलानी है। जिसमें कोई भी खामी होगी वो शान्ति नहीं फैला सकते।

5) हमें सदा ध्यान रखना है कि हम ऐसा कोई कर्म नहीं करें, ऐसी कोई कमी न हो जो वातावरण अशान्त हो जाए। विश्व को आज शान्ति की जरूरत है। विश्व में शान्ति फैलाने वालों में ही अगर कमी होगी तो यह काम कौन करेगा! अब विश्व की ऐसी हालत देख रहे हैं तो अभी तपस्या नहीं करेंगे तो कब करेंगे! अब माया के तूफानों से फ्री होकर, संकल्प विकल्प से भी मुक्त होकर तपस्या करो। सर्व गुण सब कलायें भरने के लिए अवगुण, खामी वा कमी को समाप्त करो।

6) ब्रह्मा माँ ने बड़े प्यार से हमें उठाया है। हम गन्दे कूड़े किचड़े में पड़े थे, हमको अपना बनाया है। न जात देखी, न गरीबी देखी... तरस माँ को पड़ता है। बाप तो ऊंचे ते ऊंचा है और धर्मराज भी है। हम कमजोर, अनाथ, भटकी हुई आत्मा थे। जो बेघर, अनाथ, दु:खी, गरीब होता है उस पर तरस पड़ता है। ब्रह्मा माँ द्वारा हमने बाप को पहचाना है। जब बाबा के बनते हैं तो देह-अभिमान, गरीबी, साहूकारी सबसे छूट जाते हैं। ब्रह्मा माँ के बच्चे बनने से देह सम्बन्ध सब भूल जाता है। पहले जब आत्मा का ज्ञान मिला तो देह सम्बन्ध सबसे डिटैच हो गये। फिर अन्दर से आता यह देह सम्बन्ध हमारे नहीं हैं। लौकिक और अलौकिक में रात दिन का अन्तर है। हम बाबा के बने तो निश्चिन्त हो गये।

7) हम सौभाग्यशाली हैं, अभी पुरुषार्थ करके पदमापदम भाग्यशाली बनना है। निराकारी, निरहंकारी, निर्विकारी बनाने वाला हमारा बाबा है। वर्सा शिवबाबा से मिलता है लेकिन ब्रह्मा बाबा ने हमें वर्सा लेने का पात्र बना दिया। बाबा हमें कोई चेला वा दास नहीं बनाता। बाबा हमें अपना बच्चा समझता है। बच्चा समझकर सत्य ज्ञान देता है। हम जितना-जितना सत्य वचन सुनते जाते तो लगता है बरोबर यह वचन राजाओं का राजा बनाने वाले हैं। रॉयल्टी और पवित्रता के संस्कार भरते जाते हैं। गुलामी के संस्कार छूटते जाते हैं। अच्छी तरह से आत्मा महसूस करती है - सत्य बाप, सत्य टीचर और सतगुरु हमें सत्य रास्ता बता रहे हैं।

8) बाबा घड़ी-घड़ी हमें महान मन्त्र की याद दिलाते हैं और कहते हैं एक-एक महावाक्य को महामन्त्र मानो। कई पूछते हैं - हम बाबा को कैसे याद करें। हम कहते हैं बाबा को नहीं बाबा के महावाक्यों को याद करो। यह महावाक्य ही मन को एकाग्र करने में मदद करते हैं। भक्ति में कितना भी राम, राम करते रहो मन एकाग्र नहीं होता। बाबा के महावाक्यों में मन टिक जाता है। सारे वेद शास्त्र पढ़ने वालों का मन शान्त नहीं होता। हम सार सुनते तो भी मन सहज ही एकाग्र हो जाता है। हमारे मन में और कुछ है ही नहीं। सार में बहुत शक्ति है।

9) बाबा की शिक्षायें हमको स्वरूप बनने के लिए प्रेरित करती हैं, शक्ति मिलती है। यह शिक्षाएं ऐसी मीठी प्रेम भरी हैं जो दिल में लग जाती हैं, हम छोड़ नहीं सकते। दिल चाहता है सारा दिन बाबा के शिक्षाओं की माला फेरते रहें। बुद्धि में अगर ज्ञान रत्न नहीं होंगे तो खाली-खाली लगेगा, भरपूर नहीं लगेगा, खुशी नहीं होगी। खुशी में नाचेंगे तो हल्के होंगे, हल्के होंगे तो नाचेंगे। व्यक्त भाव छूट जायेगा। अव्यक्त स्थिति का अनुभव होगा। उड़ती कला होती जायेगी। उड़ती कला में जाने के लिए ज्ञान रत्नों से खेलो।

10) अभी हम बेगर से प्रिन्स बन रहे हैं, इस नशे में रहो। बेगर अर्थात् जो फ्री है, जिसकी कहाँ भी इच्छा, ममता नहीं है। बाबा ने हमें बेगर बनाया ही है खुशी में नाचने के लिए। बाबा कहते हैं फकीरानों साहेब लंगदा प्यारा... साहेब को फकीर प्यारे लगते हैं इसलिए सच्ची दिल से फकीर बन जाओ। फकीर अर्थात् सिम्पल, सच्चे। झूठ से वैराग्य हो। उसका त्याग हो तब तपस्वी बन सकेंगे।